महफिल में अश्विनी वर्मा, श्रद्धा बैनर्जी

ग़ज़ल गायकी का पारंपरिक अंदाज

रायपुर. भिलाई इस्पात संयंत्र के क्रीड़ा एवं मनोरंजन परिषद ने शास्त्रीय सुगम गायन वादन को बढ़ावा देने हेतु महफिल नामक संगठन बनाया है, जिसमें वह अंचल की उदीयमान प्रतिभाओं को लगातार मंच दे रहा है. इसी की एक बैठक बहुउद्देशीय सभागार में,15 मई को हुई. फनकार थे– सर्वश्री अश्विनी वर्मा एवं सुश्री श्रद्धा बेनर्जी.

महफिल का उक्त आयोजन गज़लों पर केन्द्रित था. सभा की शुरूआत श्रद्धा बेनर्जी के गायन से हुई. श्रद्धा बेनर्जी नवोदित फनकार है. उनकी आवाज में ताज़गी है. लेकिन श्रद्धा को अभी बहुत रियाज की जरूरत है. विशेष रूप से सुर में गाने के लिये श्रद्धा बेनर्जी ने एक भजन सहित दो–तीन गुजले सुनाई. श्रद्धा का चयन इस लिहाज से तो ठीक ही रहा कि नवोदितों को मंच उपलब्ध करवाना है. पर उसके साथ जिस श्रेणी के कलाकार को शामिल किया गया वह समझ से परे रहा. कुल मिलाकर श्रद्धा का गायन नए श्रोताओं एवं उसके परिजनों और उसे कार्यक्रम में शामिल करने वालों को ही श्रवणीय लगा होगा. यदि श्रद्धा को सचमुच गायकी में अपना नाम कमाना है तो मंच प्रदर्शन का मोह त्याग अच्छा सुनना, अच्छा सीखना होगा.

श्रद्धा के साथ संगति करने तबले पर थालचंद्र शेगेकर, वायलिन पर श्री कर्मकार, हारमोनियम पर प्रभंजय चतुर्वेदी थे. इसी के उपरांत भिलाई के ही युवा (सभी संतुलित थे.) गायक अश्विनी कुमार वर्मा मंच पर आए. अश्विनी ने अपनी गायिकी अपने पिता स्व. रतनचंद वर्मा के साए में सीखी. आज वे अपने पिता की गायकी को हुबहू आगे बढ़ाने वालों में एकमात्र हैं.

आकाशवाणी–दूरदर्शन के ए– ग्रेड गजल गायक अश्विनी वर्मा का गायन आज से तीन–चार दशकों पूर्व गायी जाने वाली पद्धति का है. लाहौर, पंजाब अंग को समझने वालों को ऐसी गायकी बड़ा सकून देती है. इस तरह की खुले गले वाली गायकी में आवाज लगाने का ढंग की कलाकार का स्वरूप सामने धर देता है. थोड़े में यदि कहा जाए तो इस ढंग की गायकी वही समझ सकता है, जो गायकी के संस्कार से परिचित हो.

आज अश्विनी वर्मा ने गज़लों से शुरू करते कबीर दास जी के भजन से अपने कार्यक्रम का समापन किया. रागदारी बद्ध गायकी वाले अश्विनी वर्मा अपनी गज़लों में बहत सफाई से रागदारी

व्यक्तित्व–कृतित्व पर बातचीत

पिरोते है. इसलिये गज़लों का आनंद तो वे देते ही है. रागदारी का मज़ा भी उसी में द्रे जाते हैं. इस दौर में जब लोगबाग तेजगति के संगीत में बहे जा रहे है. अश्विनी वर्मा बिला हिचक अपनी विरासत में खड़े हैं. यहीं तटस्थता उनकी सफलता है और जब गज़लों के नाम पर फिल्मी गीत सुनवा रहे कतिपय गज़ल गायकों के मध्य अश्विनी वर्मा सरीखे लोग आलाप लेते है. (गाते हैं) तो जिस ताजगी, चैनदारी, शुद्धता का अहसास होता है उसका आनंद सुनने समझने वाला ही जान सकता है.

आज अश्विनी वर्मा के साथ तबले पर अंचल के ही उभरते तबलिये महेन्द्र चौहान अपनी उंगलियों का जादू दिखा रहे थे. महेन्द्र को विरासत में तबला मिला, अपने चाचा– मदन चौहान से. उन्होंने संगत का मिजाज, सफाई सीखी और अपनें रियाज के बल पर अपनी जगह बनाई. यदि संगत के साथ में गिटार भी अश्वनी वर्मा रखते तो भरावट आती.

बहुउद्देशीय सभागार में संपन्न सुगम संगीत की इस संध्या में आयोजन समिति चयन में सावधानी बरते तो अच्छा लगेगा और किस फनकार के साथ किसको बिठाए इस पर भी चिंतन की आवश्यकता है. एक बात और समूचे छत्तीसगढ़ से इसमें कलाकारों को अवसर दें. बावजूद आयोजन से सम्बद्ध सभी बधाई के पात्र है

नव भारत मंगलवार 17/6/1997